विश्वविद्यालय स्वायत्तता का अर्थ
(Meaning of University Autonomy)

स्वायत्तता का शाब्दिक अर्थ होता है स्वशासन का अधिकार या स्वतन्त्रता। अतः विश्वविद्यालय स्वायत्तता का अर्थ हुआ—विश्वविद्यालयों को उन सभी कार्यों के करने की पूर्ण स्वतन्त्रता दी जाये, जिनके लिए उनकी स्थापना की जाती है। मुदालियर के शब्दों में "विश्वविद्यालय स्वायत्तता का अर्थ है—विश्वविद्यालयों को कार्य करने की स्वतन्त्रता।" विश्वविद्यालय स्वायत्तता का अर्थ है, कि वे अपने आन्तरिक प्रशासन एवं शैक्षिक निर्णय लेने में पूर्ण स्वतन्त्र हों, उन्हें अपने पाठ्यक्रम बनाने को अधिकार हो, उनको शिक्षकों के चयन करने का और उनकी पदोन्नति करने का अधिकार हो, उनको छात्रों को प्रवेश देने सम्बन्धी नियमों का निर्माण करने, उनकी परीक्षा लेने, उनका मूल्यांकन करने, और उनको उपाधि प्रदान करने का अधिकार हो, उनको शोध के क्षेत्र से सम्बन्धित विषयों पर निर्णय लेने तथा अपने कार्यक्षेत्र के महाविद्यालयों को सम्बद्धता प्रदान करने एवं उनका पर्यवेक्षण, निरीक्षण व मानीटरिंग करने का अधिकार हो।

यहाँ यह बात ध्यान देने योग्य है कि विश्वविद्यालय स्वायत्तता (University Autonomy) और शिक्षकों की अकादमिक स्वतन्त्रता (Academic Freedom) में भारी अन्तर है। विश्वविद्यालय स्वायत्तता का अर्थ विश्वविद्यालयों के कार्यों में हस्तक्षेप न करने से है जबकि अध्यापकों की स्वतंत्रता का अर्थ उनको अपने विचारों के अनुरूप शिक्षण करने, अपने-अपने क्षेत्र में स्वतंत्र चिन्तन करने और अपने विचारों को अभिव्यक्त करने से है। इसका अर्थ अध्यापकों को कक्षा में अथवा कक्षा से बाहर अपने विचारों को व्यक्त करने, अध्ययन करने, शोध करने, लेखों और शोध कार्यों को प्रकाशित करने तथा राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर विविध मंचों पर बोलने एवं विचार-विमर्श करने की स्वतंत्रता से है। शिक्षा आयोग ने कहा है

Scanned by TapScanner

विश्वविद्यालय स्वायत्तता की आवश्यकता एवं महत्त्व
(Need and Importance of University Autonomy)

विश्वविद्यालयों का उद्देश्य सत्य की खोज करना, सभ्यता और संस्कृति का संरक्षण करना, विवेकशील और कुशल नागरिकता का विकास करना और बौद्धिक वातावरण का निर्माण करना है। पण्डित नेहरू ने कहा था, "विश्वविद्यालय मानवता के लिए, सहिष्णुता और विवेक के लिए विचारगत साहस तथा सत्य की खोज के लिए होते हैं। उनका लक्ष्य है कि मानव समाज निरन्तर उच्चतर उद्देश्यों की ओर कदम बढ़ाये, जो मानव उन्नति के लिए आवश्यक है।" विश्वविद्यालय अपने कर्त्तव्यों और उत्तरदायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन नहीं कर सकते हैं जब उन्हें विद्यार्थियों और शिक्षकों के चयन व प्रवेश करने, पाठ्यक्रमों के निर्धारण करने, किसी उपाधि को प्राप्त करने के लिए अपेक्षित योग्यताओं व शर्तों को निश्चित करने, अपने कार्यों को प्रभावी ढंग से पूरा करने की दृष्टि से उचित माने जाने वाले आर्थिक साधनों का उपयोग करने आदि क्षेत्रों में स्वायत्तता मिले। इसके बिना विश्वविद्यालय शिक्षण कार्य, शोध कार्य और प्रसार सेवाओं को अच्छी तरह से नहीं कर सकते। यह सभी कार्य एक स्वतंत्र संस्था ही ईमानदारी के साथ कर सकती है। अतः यह अपरिहार्य है कि विश्वविद्यालयों को अपने कार्य में स्वायत्तता प्राप्त हो। विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता की आवश्यकता एवं महत्त्व के विषय में निम्नलिखित कथन दृष्टव्य हैं—

भारतीय शिक्षा आयोग (कोठारी आयोग)— *"यह स्वीकार किया जाना आवश्यक है कि स्वायत्तता के अभाव में विश्वविद्यालय अपने शिक्षण, अनुसन्धान एवं समाज सेवा के मुख्य कार्यों को कुशलतापूर्वक नहीं कर सकते हैं।"*

(It is important to recognise that without autonomy Universities cannot discharge effectively their principal function of teaching, research and service of the community.)

वी०वी० गिरि (V.V. Giri)— *"स्वायत्तता उचित वातावरण के सृजन की एक योजना है जिसमें व्यावसायिक चिन्तक बौद्धिक अखण्डता से अन्तर्राष्ट्रीय मानव समुदाय के हितों और राष्ट्र की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उन्नति के लिए अपना सर्वोत्तम योगदान देने की प्रतिज्ञा करते हैं।"*

(Autonomy was intended to create a proper atmosphere in which professional thinkers pledged to intellectual integrity could contribute their best for the good of the international human society and the economic, political, social and cultural progress of the nation.)

वी०के०आर०वी० राव (V.K.R.V Rao)— *"सकारात्मक स्वायत्तता विश्वविद्यालय के ढाँचे का मूलतत्त्व—मांस, रक्त और अस्थि—है। यह एक विश्वविद्यालय, जो एक सामाजिक संस्थान है और जिसके उद्देश्य समाज द्वारा निर्धारित किये गये हैं, की प्रभावशील कार्य प्रणाली के लिए एक पूर्व शर्त है।"*

(Positive autonomy is the essence—the flesh, blood and bones—of university structure. It was a functional precondition for the efficient working of a university which is a social institution and whose objectives were laid down by society)

ए० लक्ष्मण स्वामी मुदालियर (A Lakshman Swami Mudaliar)— *"स्वतंत्रता का अर्थ कार्य करने की स्वतंत्रता से है। यह कार्य समाज, राज्य तथा संसार के प्रति अपने दायित्व को समझकर किया जाता है। इस कार्य में अनुशासन और कर्त्तव्य की भावना छिपी है। अतः हमको हर मूल्य पर इसे स्थापित करने का प्रयत्न करना चाहिए।"*

विश्वविद्यालय स्वायत्तता के क्षेत्र
(Scope of University Autonomy)

कोठारी आयोग के अनुसार विश्वविद्यालयों को निम्नलिखित तीन क्षेत्रों में स्वायत्तता प्राप्त होनी चाहिए—

Scanned by TapScanner

(1) **प्रवेश के लिए विद्यार्थियों के चयन में**—किसको पढ़ाया जाये (whom to teach)—इस संबंध में विश्वविद्यालय को स्वायत्तता प्राप्त होनी चाहिए।

(2) **अध्यापकों की नियुक्ति एवं पदोन्नति में**—कौन पढ़ाये (who to teach)—इस संबंध में भी विश्वविद्यालयों को स्वायत्तता मिलनी चाहिए।

(3) **पाठ्यक्रमों तथा शिक्षण विधियों के निर्धारण में**—क्या पढ़ाया जाये और कैसे पढ़ाया जाये (what to teach and How to teach)—इस संबंध में भी विश्वविद्यालयों को पूर्ण स्वायत्तता होनी चाहिए।

उक्त तीन क्षेत्रों के अतिरिक्त शोध के क्षेत्रों से सम्बन्धित समस्याओं तथा परीक्षा एवं मूल्यांकन की विधियों को चुनने और निर्धारित करने में भी विश्वविद्यालयों को स्वंतत्र होना चाहिए।

Scanned by TapScanner